Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 3, May-June – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 13/05/2020 Accepted on : 28/05/2020 Publication Date: 30/06/2020

निर्वाचन प्रक्रिया में मतदान व्यवहार

[1] चन्द्र प्रकाश माली, [2] डॉ. विष्णु कुमार,
[1] शोधार्थी, [2] शोध निर्देशक,
भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर (राजस्थान),
Email - [1]maliprakashchander@gmail.com, [2] vishnukr.12@gmail.com

सारांश : भारत विश्व का अति सम्मानित तथा लोकतान्त्रिक पर्वो का देश है। जिसमें जनता सर्वोपरि है। लोकतान्त्रिक व्यवस्था में एक स्वतंत्र नागरिक अपने मतदान के अधिकार के प्रयोग के माध्यम से सहमति प्रदान करता है एवम् सरकार का निर्माण करके अपनी सक्रिय राजनीतिक सहभागिता प्रदान करता है। मतदान नागरिक का वह अधिकार है जिसमें वह अपने और विभिन्न प्रकार के सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक मुददों पर सत्तासीन होने की आकांक्षा के साथ अनेक प्रकार कें प्रयोगों, प्रक्रियाओं एवम् प्रचार माध्यमों के द्वारा निर्वाचन की प्रक्रिया में भाग लेता है। भारत में निर्वाचन प्रक्रिया अनेक कारकों से प्रभावित होती है और निश्चित तौर पर यह देशकाल और परिस्थिति के अनुक्रम में होती है। प्रथम लोकसभा के आम चुनाव से लेकर 17वीं लोकसभा आम चुनाव 2019 तक किस प्रकार मतदान व्यवहार परिवर्तित एवम् प्रभावित हुआ और साथ ही उसने किस प्रकार भारतीय शासन और राजनीति को प्रभावित किया। राजनीतिक दल और जनता के मध्य होने वाली चुनावी अन्तक्रिया की निष्पक्ष परिणति मतदान व्यवहार कहलाता है।

संकेतक शब्द : मतदान व्यवहार, लोकतंत्र, निर्वाचन, चुनाव।

१ प्रस्तावना:-

हम **21**वीं सदी में जी रहे है। यह लोकतंत्र का युग है। इस युग में निष्पक्ष, पारदर्शी और नियमित चुनाव जरूरी है। भारत एक लोकतांत्रिक देश है, जहां सरकारों का गठन संसदीय चुनाव प्रणाली के माध्यम से होता है। ‘‘ सामाजिक व्यवस्था में वैयक्तिक कर्ताओं की बहुलता होती है, जो एक स्थिति में दूसरे से अन्तक्रिया करते है।‘‘**1** लोकतंत्र शासन की सर्वाधिक लोकप्रिय शासन प्रणाली है। लोकतंत्र समता पर आधारित एक शासन की गारन्टी है। समस्त उच्चता और निम्नता को हटाकर शासन के निर्माण में प्रत्येक नागरिक का सम्मिलित होना लोकतंत्र की सर्वप्रमुख विशेषता है। लोकतंत्र मताधिकार भारतीय संविधान के अनुच्छेद **326** में है। यह लोकतंत्र में राजनीतिकरण समाजीकरण व राजनीतिक सहभागिता को सुनिश्चित करता है। मतदान का अधिकार लोकतंत्र की एक ऐसी विधा है जिसमें मतदाता अपने अन्तकरण के विचारों को गुप्त रूप से प्रकट करता है। मतदान वाक् और अभिव्यक्ति का अधिकार है जिस पर राज्य, समाज एवम् किसी प्रकार की शक्ति एवम् सत्ता का हस्तक्षेप नहीं होता है। मतदान के माध्यम से बनने वाली सरकार सदैव व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से उत्तरदायी होती है क्योंकि एक निश्चित समय के बाद सरकार को जनता से पुनः जनादेश लेना पड़ता है। जैसे राजस्थान विधानसभा चुनाव-**2018,** दिल्ली विधानसभा चुनाव-**2020** तथा केन्द्र में भारतीय जनता पार्टी।

अतः लोकतंत्र में मतदान व्यवहार एक महत्वपूर्व तथ्य है। मतदान व्यवहार किसी देश अथवा राज्य में लोकतंत्र के मूल्य, स्वतंत्रता, समानता, विधि के शासन तथा संविधानवाद की स्थिति का परिचायक है जो लोकतंत्र के मूल आदर्श है। भारतीय संविधान ने इन उच्च आदर्शो को भली भांति निभाया है।

२ भारतीय राजनीति और मतदान आचरण:

मतदान व्यवहार का अभिप्रायः यह है कि मतदान अपने मत के प्रयोग के समय किन किन तत्वों से प्रभावित होता है। इसमें यह भी सम्मिलित है कि कौन सी प्रकृति, मुददे तथा देश की समस्या उसे मतदान हेतु प्रेरित करती है। इसके माध्यम से यह जानने का प्रयास भी किया जाता है कि मतदाता एक विशेष प्रत्याशी अथवा राजनीतिक दल की ओर क्यों आकृष्ट होता है मतदान लोकतंत्र की एक अति पूजनीय तथा सम्मानित प्रकिया है सर्वप्रथम फ्रांस में **1913** में मतदान व्यवहार किया गया। भारत में मतदान व्यवहार के प्रथम अधिकारिक अध्ययन में कहा गया है कि ‘‘ मतदान में भाग लेने वाले लोगों का अनुपात जनसंख्यात्मक लक्षणों और सामाजिक आर्थिक पद के अनुसार बदलता रहता है। मतदान में भाग न लेने की प्रकृति स्त्रियों में

पुरूषों से अधिक, निरक्षरों में साक्षरो से अधिक, कम आय समूहों में ज्यादा आय समूहों से अधिक, तथा सामाजिक दृष्टि से पिछडे हुए वर्गो में सामाजिक दृष्टि से उन्नत वर्गो की तुलना में अधिक होती है। मतदान में भाग न लेने की प्रवृति उन लोगों में अधिक होती है, जिन्हें कम राजनीतिक सूचना प्राप्त होती है अथवा जिन पर संचार के साधनों और अन्य दबावों का प्रभाव कम है।''**2**

३ भारतीय लोकसभा चुनाव में मतदान व्यवहार के 4 चरण दिखाई देते है:

प्रथम चरण रजनी कोठारी द्वारा प्रस्तुत अवधारणा कांग्रेस प्रणाली के रूप में जानी जाती है। भारत में प्रथम आम चुनाव **1952** से लेकर **1962** तक सम्पन्न चुनावों में पं. नेहरू का चमत्कारिक व्यक्तित्व था, दूसरे चरण में **1967** का चुनाव जिसमें कांग्रेस का एकाधिकार टूट चुका था जिसमें कांग्रेस के कामराज तथा एस.के. पाटिल जैसे नेता चुनाव हार चुके थें इसी दौरान क्षेत्रीय राज्य स्तरीय राजनीतिक दलों का भी जन्म हो चुका था। तीसरा चरण **1990** के आस पास प्रारम्भ होता है जिसमें संविद सरकार के प्रौढ़ होने, जातीय अस्मिता को प्रखरता के साथ राजनीति में जोड़े जाने, साम्प्रदायिक राजनीति तथा समझौते एवम् गठबंधन का युग शुरू हुआ। चोथे चरण जिसमें **16**वीं लोकसभा चुनाव **2014** तथा **17**वीं लोकसभा **2019** के चुनाव में हिन्दू राष्ट्रवादी भारतीय जनता पार्टी का समय प्रारम्भ हुआ जिसमें श्री नरेन्द्र मोदी सरकार अति प्रचण्ड बहुमत से केन्द्र में सत्ता में आई। मोदी लहर अपने आप में एक अनूठी लहर है।

अति गम्भीर विशलेषण करें तो भारत में प्रथम आमचुनाव- **1952** से लेकर **17**वीं लोकसभा चुनाव-**2019** तक वर्तमान भारत में मतदान व्यवहार तथा मतदान आचरण अनेक विचारों तथा तथ्यों से प्रेरित दिखाई देता है जो निम्नलिखित है।

- स्वतंत्रता आन्दोलन के आदर्श मूल्य (परतंत्रता से स्वतत्रंता के साधन) जिसमें तिलक, गांधी, सुभाष, पटेल, नेहरू, अम्बेडकर का योगदान
- विकास की राजनीति
- विचारधारा (गांधीवाद, राष्ट्रवाद, समाजवाद एवम् साम्यवाद)
- राजनीति दलों की लोकशिक्षण कला
- राजनीतिक पार्टियों तथा सरकारों की विदेश एवम् अन्तर्राष्ट्रीय नीति
- राज्य विधानसभा तथा लोकसभा आम चुनाव में नेतृत्व की भूमिका
- राजनीतिक स्थिरता और केन्द्र में सुदृढ सरकार की आकांक्षा
- आर्थिक स्थिति, बेराजगारी तथा मँहगाई का मुददा
- राजनीतिक दलों की विचारधारा, कार्यक्रम और नीति
- जातिवाद - ''भारत की सम्पूर्ण राजनीति जाति पर घूमती है।''**3**
- क्षैत्रवाद (भूमी पुत्र) की प्रवृति
- भाषाई स्थिति
- युद्ध में सफलता- असफलता
  - **1962** का भारत चीन युद्ध
  - **1965** व **1971** का भारत- पाक युद्ध
  - **1999** का कारगिल संधर्ष
  - **2019** में पुलवामा व बालाकोट में सर्जिकल स्ट्राइक जिनका केन्द्र में पदासीन सरकारों को लाभ मिला है।
- शासन की क्षमता-अक्षमता का प्रश्न
- आर्थिक साधन
- आन्दोलन, सहानुभूति लहर, प्रदर्शन की राजनीति आदि।

भारत में मतदान व्यवहार में राज्य स्तर पर क्षैत्रीय मुददे प्रभावी रहते है जैसे- शिक्षा, मुफ्त बिजली, फैमिली होस्पिटल, मुफ्त तीर्थयात्रा आदि। दिल्ली आम चुनाव-**2020** इसका उदाहरण है। राजस्थान विधानसभा चुनाव-**2018** व मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में नवम्बर-**2018** में विधानसभा के चुनाव हुए इन राज्यों में कांग्रेस की सरकारे बनी जो क्षेत्रीय मुददों तथा समस्याओं पर आधारित थी और मात्र **6** महीने बाद यानि अप्रेल-मई **2019** में केन्द्र (लोकसभा आम चुनाव-**2019**) में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी जो राष्ट्रीय मुददों को लेकर थी। इससे यह बात स्पष्ट रूप से सिद्ध होती है कि भारतीय मतदाता राज्य विधानसभा तथा केन्द्र में लोकसभा आम चुनाव में अलग-अलग मुददों तथा समस्याओं पर मतदान करता है जो भारतीय लोकतंत्र की गतिशील राजनीतिक जागरूकता का परिचायक है। लोकसभा चुनाव में दिल्ली

की सभी 7 सीटों पर भा.ज.पा. की विजय हुई लेकिन 7 फरवरी **2020** को दिल्ली विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी को अति प्रचण्ड बहुमत मिला। यही भारतीय चुनावों का स्थानीय, क्षेत्रीय, राज्यस्तर तथा केन्द्र का चुनावी विश्लेषण है।

‘‘वर्तमान में सी.ए.ए. एवम् एन.आर.सी. प्रकरण मे शाहीन बाग (दिल्ली) तथा भारत के कई राज्यों में धरना, प्रदर्शन, आगजनी, हत्या, सार्वजनिक सम्पति की क्षति से भारतीय जनता पार्टी की छवि पर असर पड़ा है। जिसका दिल्ली विधानसभा चुनाव-**2020** में स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।‘‘**4**

लोकसभा चुनाव -2019 - ‘‘ लोकसभा चुनाव - **2019** में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले निम्न कारण थे। जिसके कारण भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी।‘‘**5**

- **राष्ट्रवाद** - लोकसभा चुनाव के पहले यह माना जा रहा था कि विपक्ष बेरोजगारी, मंहगाई और राफेल के सवाल को लेकर भाजपा को दबोच लेगी। ऐसा लगने भी लगा था जब पिछले साल कांग्रेस को मध्य प्रदेष, छत्तीसगढ़, राजस्थान और कर्नाटक आदि राज्यों में सफलता मिली थी लेकिन चुनाव के ठीक पहले नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रवाद का ऐसा डंका बजाया कि सारे मुद्दे हवा हो गए। भाजपा की लगातार दूसरी जीत में सबसे अहम भूमिका नरेन्द्र मोदी और अमित शाह की जोड़ी की है।
- **विकल्प का अभाव**:- इस बार के चुनाव में लोगों में नरेंन्द्र मोदी सरकार से नाराजगी थी। इसे एंटी इनकंबेंसी फैक्टर से नरेंन्द्र मोदी और उनके मुख्य सिपहसालार अमित शाह भी वाकिफ थे। इसके बावजूद प्रारंभ से ही वे जीत के प्रति आशावान थे। इसकी बड़ी वजह यह रही कि विपक्ष के पास नेता का अभाव था। विपक्ष कोई एक चेहरा प्रस्तुत नहीं कर सका। अपने चुनावी रैलिया में नरेन्द्र मोदी ने यह कहकर जनता को प्रभावित किया कि यदि यूपीए को जीत मिली तो देष को हर सप्ताह नया पीएम मिलेगा।
- **नरेन्द्र मोदी-अमित शाह की जोड़ी**:- भाजपा की लगातार दूसरी जीत में सबसे अहम भूमिका नरेन्द्र मोदी और अमित शाह की जोड़ी की है। इन दोनों नेताओं ने चाहे भले ही भाजपा पर अपना कब्जा बना लिया हो, लेकिन व्यूह रचना में उनका कोई सानी नहीं है, यह साबित भी कर दिया है। सात चरणों में हुए मतदान के क्रम में इन दोनों नेताओं ने चरण दर चरण रणनीतियां बनायी और उन्हे नेता के बजाय प्रोफेशनल की तरह अंजाम दिया।
- **मैं भी चैकीदार ने दिखाया रंग** - भाजपा के लिए खास बात यह रही कि विपक्ष राष्ट्रीय स्तर पर नरेन्द्र मोदी सरकार के खिलाफ कोई एजेंडा तय करने में पूरी तरह विफल रहा। एक राफेल को लेकर राहुल गांधी ने ‘चैकीदार ही चोर है‘ का उपयोग कर हमला किया। लेकिन जब नरेन्द्र मोदी ने ‘ मैं चैकीदार ‘ कहकर हमला किया तब राहुल के नारे हवा में उड़ गए। रही सही कसर सुप्रीम कोर्ट ने उतार दी जब राहुल गांधी को इस मामले में माफी मांगने को कहा गया।
- **पहले से ही बिखरा था विपक्षी खेमा**:- भाजपा को मिली इस जीत में जितनी भूमिका नरेन्द्र मोदी और अमित शाह की थी, विपक्ष की भूमिका भी कुछ कम नहीं थी। एक ओर एन.डी.ए. खेमे के सभी घटक दल एकजुट नजर आए तो विपक्षी खेमे में सभी अलग-अलग थे। कांग्रेस तो अधिकांश राज्यों में जूनियर पार्टी के रूप में रही। क्षेत्रीय दलों के साथ तालमेल व सामंजस्य के अभाव में बिखरा विपक्ष जनता के समक्ष कोई विकल्प देने में सक्षम नहीं हो सका।
- **येन-केन प्रकारेण चर्चा में बने रहे नरेंन्द्र मोदी**:- भाजपा की जीत में बड़ी वजह उनका हमेशा चर्चा में बने रहना रहा। इसके लिए भाजपा ने पहले से ही तैयारी कर रखी थी। चरण-दर चरण उनकी आक्रामकता बढती गयी। भारतीय सेना के नाम पर वोट मांगने से लेकर अभिनेता अक्षय कुमार से साथ उनके गैर राजनीतिक इंटरव्यू ने भी उन्हें चर्चा में बनाए रखा जबकि विपक्षी नेताओं के चेहरे मीडिया में आए तो जरूर लेकिन जनता को उनसे कोई मसाला नहीं मिला जो उन्हे या तो गुदगुदा सके या फिर प्रेरित कर सके। उनके भाषणों में केवल नरेन्द्र मोदी का विरोध था जबकि नरेन्द्र मोदी के भाषणों में किसी सुपरहिट फिल्म के जैसे सारे मसाले थे।
- **अजहरमसूद**:- भारतीय जनता का नरेंन्द्र मोदी पर विश्वास उस समय और बढ़ गया जब संयुक्त राष्ट्र संघ ने पाकिस्तानी आतंकी अजहर मसूद को अंतरराष्ट्रीय आतंकी करार दिया। इसे भजपा और नरेन्द्र मोदी ने इस रूप में पेश किया कि यह सब उनके प्रयासों के कारण ही संभव हुआ। चीन को मनाने का श्रेय भी इन्हें ही मिला। भाजपा की रणनीति ही रही कि आम जनता के दिमाग से वह तथ्य भी गायब हो गया कि इसी अजहर मसूद को अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने रिहा किया था।
- **नोटबंदी और जी.एस.टी. मामले में भी विपक्ष को मिली हार**:- यह नरेन्द्र मोदी के प्रति भारतीय जनता का विष्वास ही रहा कि नोटबंदी और जी.एस.टी. के कारण अर्थव्यवस्था की डावाडोल स्थिति भी मुददा नहीं बन सकी। हालांकि इसकी पूरी कोशिश विपक्ष ने की, लेकिन जनता ने नरेन्द्र मोदी के इन दोनों फैसलों का समर्थन किया। नरेन्द्र मोदी अर्थशास्त्री नहीं होने के बावजूद यह बताने में सफल रहे कि इन दोनों फैसलो से देश की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है।

- **मजबूत नेता की छवि का लाभ**:- नरेन्द्र मोदी को इस बार के चुनाव में सबसे अधिक लाभ इस छवि के कारण मिला कि वे मजबूत नेता है। जम्मू- कश्मीर में आतंकी हमले के बाद बालाकोट हमले को उन्होंने जिस तरीके से चुनावी लाभ के लिए भुनाया विपक्षी दलों ने उनकी आलोचना अवश्य की। लेकिन देश की जनता इससे संतुष्ट दिखी कि भारत अब केवल हमले सहता नहीं है बल्कि पलटकर जवाब भी देता है।
- **अमित शाह का प्रबंधन और चुनावी गुणा-**भाग:- इस चुनाव में भाजपा के रणनीतिकार और अध्यक्ष अमित शाह की रणनीति एक बार फिर कारगर साबित हुई। लगातार काम, छोटे से छोटे कार्यकत्ताओं से सीधा संपर्क, बेहतर मैनजमेंट, विपक्षी को उसी के मुददों पर जाकर घेरना और सही उम्मीदवारों का चयन एक बार फिर से भाजपा को केंन्द्र की सत्ता में ले आया।

४ उपसंहार :

भारतीय राजनीति के अन्तर्गत चुनावी प्रक्रिया में मतदान व्यवहार सकारात्मक एवम् नकारात्मक दोनों ही प्रकृतियों से व्यवहार में होता आया है। जाति, धर्म, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, भाषावाद इत्यादि प्रवृतियों का प्रयोग बहुधा राजनीतिक हित की पूर्ति के लिए किया जाता है। समाज के अन्तिम सोपान पर खड़ा व्यक्ति ‘‘ जाति विशेष ‘‘ में आने के बाद अपने आपको निराशा में पाता है। वह अपने मौलिक अधिकारों को प्राप्त करने में असफल रहता है। भारतीय मतदाता सिर्फ वोट बैंक बनकर रह जाता है। वर्तमान में मंहगाई, बेरोजगारी, गिरती अर्थव्यवस्था, विकास जैसे मुद्दे, काम की राजनीति, मतदान व्यवहार तथा आचरण को प्रभावित करते है जो कि भारत में लोकतंत्र की परिपक्वता के परिचायक हैं हालांकि जाति अभी भी अति महत्वपूर्ण प्रभावी कारक है। मतदान आचरण तथा व्यवहार ईमानदार व्यक्तित्व, स्वच्छ छवि और आम नागरिक के आधारभूत विकास की संकल्पना से प्रभावित हो तब इस प्रकार की राजनीतिक चेतना राष्ट्रीय राजनीति के साथ व्यक्तिगत तथा सामूहिक उन्नति का कारक बनेगी। भारत में सफल लोकतंत्र चुनावों पर निर्भर करता है तथा आम जनता को भारत के राष्ट्रीय पर्व **26** जनवरी, **15** अगस्त तथा धार्मिक सामाजिक पर्व- दीपावली, होली, ईद, क्रिस्मस, गुरूनानक जयन्ती जैसे त्यौहारों तथा पर्वों की तरह भारतीय चुनाव में भाग लेना होगा तथा ईमानदार एवम् निष्पक्ष तरीके से भयरहित मतदान करना होगा।

सन्दर्भ:

1. पारसंम, तालकट, दी सोशल स्टिम, **1970** पृष्ठ **5-61**
2. डॉ. पुखराज जैन, भारतीय राज व्यवस्था, **2017**, पृष्ठ संख्या **414**
3. भारत में जातिवाद: रजनी कोठारी
4. राजस्थान पत्रिका दिनांक-**20.02.2020**
5. विकिपीडिया
6. यादव, योगेन्द्र, ‘‘यूनाइटेड कलर्स ऑफ कांग्रेस’’ **1998-1999**, इकोनामिक एण्ड पोलिटिकल वीकली, वाल्यूम , XXXXIV] XXXV] नं**0 34** एवं **35**, पृ. **21-27.**
7. यादव, योगेन्द,‘‘अंडरस्टैंडिंग सेकंड डेमोक्रेटिक अपसर्ज’’, फ्रेसंइनफ्रैंकल, पूर्वोद्धत।
8. कोठारी, रजनी, **(1989)**, स्टेट अगेंस्ट डेमोक्रेसी: इन सर्च ऑफ ह्यूमेन गवर्नेंर्स , अजंता प्रकाशन पृ.**3-4.**
9. मेदीरता, एस.के.**(2009)** ‘‘क्रीमिनलाइजेशन ऑफ पॉलिटिक्स’’, योजना, जनवरी **2009** पृ**0 32-35.**
10. मित्रा, सबुरत के., एवं सिंह, वी.बी. **(1999)** डेमोक्रेसी एंड सोशल चेजं इन इंडिया, दिल्ली, सेज पब्लिकेशन